हिन्दुस्तान की

नई दिशाएं

www.livehindustan.com
04 सितंबर, 2019 | वर्ष 08, अंक 36

₹1

कवर स्टोरी

साइकोलॉजिस्ट

सुलझाए मन की उलझनें

एजुकेशनल न्यूज

दिल्ली यूनिवर्सिटी का हैप्पीनेस सर्टिफिकेट कोर्स

इंस्टीट्यूट वॉच

माइनिंग इंजीनियरिंग के उम्दा संस्थान

नई दिशाएं

COVER STORY

साइकोलॉजिस्ट पर यह लेख क्यों पढ़ें

पेज 04

तनाव हमारी दिनचर्या का एक हिस्सा बन चुका है। नौकरी, पारिवारिक जीवन, संबंधों में खींचतान, आर्थिक तंगी अथवा अन्य कारणों से अधिकतर आबादी तनाव में जी रही है। बतौर साइकोलॉजिस्ट करियर की अपार संभावनाओं के बारे में पढ़ेंगे।

ऑनलाइन कोर्स : बैटरी स्टोरेज सीखें ऑनलाइन — पेज 06

अवसर : सीटीईटी दिसंबर 2019 — पेज 07

मौके : ट्रेड अप्रेंटिस के लिए आवेदन — पेज 08

कामयाबी की कहानी : पद्मनाभन गोपालन — पेज 09

कोर्स वॉच : प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी में करें डिप्लोमा — 10

इंस्टीट्यूट वॉच : माइनिंग इंजीनियरिंग के उम्दा संस्थान — पेज 11

एजुकेशनल न्यूज : दिल्ली यूनिवर्सिटी का हैप्पीनेस सर्टिफिकेट कोर्स — पेज 12

पर्सनेलिटी डेवलपमेंट : सफलता की राह बनाएं खुद — पेज 13

मुद्रक तथा प्रकाशक राजीव बेओतरा द्वारा हिन्दुस्तान मीडिया वेन्चर्स लिमिटेड (एच एम वी एल) के पक्ष में एच टी मीडिया लिमिटेड प्रेस, प्लॉट नं.-8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा, जिला : गौतमबुद्ध नगर (उ.प्र.) से मुद्रित एवं 18-20, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित।
प्रधान सम्पादक : शशि शेखर
कार्यकारी सम्पादक : जयंती रंगनाथन

दूरभाष : (011) 23361234, (0612) 2223434 सम्पादकीय : (011) 66561364, 66561263
प्रसार : (011) 66561111
विज्ञापन : (011) 66561442, 66561189
फैक्स : (011) 66561451, 66561270
आर.एन.आई. नं. BIHHIN/2012/48999

जब प्ले स्टोर से एप न हो इंस्टॉल

कई एंड्रॉयड यूजर्स ने इस समस्या का सामना किया है। जब उन्होंने कोई एप इंस्टॉल करना शुरू किया तो डाउनलोडिंग पूरी होने से पहले ही एरर मैसेज नजर आया- 'दिस एप कैन नॉट बी डाउनलोडेड एरर ...' यह परेशान कर देने वाला होता है। वो भी तब, जब यह एप बड़ा हो और इसके डाउनलोड में आपका काफी समय भी जाया हो गया हो। शुक्र है कि इस समस्या का उपाय आसान है। एरर कई तरह की हो सकती हैं। बस आपको नीचे गए तरीकों को अपनाना चाहिए-

अपने फोन को रीस्टार्ट करें

किसी भी तरह के एरर का सामना करते समय सबसे पहले अपने फोन को रीस्टार्ट करके देखें। इसके बाद ही किसी अन्य तरीके को अपनाएं।

इंटरनेट कनेक्शन जांच लें

अपने इंटरनेट की कनेक्टिविटी जांच लें। यदि आप मोबाइल डेटा से एप्स को डाउनलोड कर रहे हैं, तो देख लें कि आपके पास डाउनलोडिंग के लिए पर्याप्त डेटा बचा हुआ है या नहीं।

पर्याप्त स्टोरेज स्पेस

एरर 971 का मूल कारण फोन में पर्याप्त स्टोरेज स्पेस का ना होना है। इसके लिए आप उस एप को डिलीट कर दें, जिसे आपने शायद ही कभी या फिर बहुत कम इस्तेमाल किया हो। इसी के साथ आप अपने फोन से वो डेटा भी डिलीट कर दें, जो आपके लिए जरूरी नहीं है, ताकि स्टोरेज स्पेस बढ़ाया जा सके।

एसडी कार्ड जांच लें

क्योंकि फोन एसडी कार्ड इस्तेमाल करता है तो इस कारण ऐसी समस्या उत्पन्न हो सकती हैं। आप इस समस्या को या तो एसडी कार्ड थोड़े समय के लिए रिमूव करके या फिर डिफॉल्ट स्टोरेज को फोन में बदलकर कर सुलझा सकते हैं। ऐसा आप तभी करें जब आप निश्चित हों कि आपकी फोन की इंटरनल मेमोरी पर्याप्त है। इसके लिए आप सेटिंग्स में जाएं, स्टोरेज ऑन योर फोन पर जाकर उपलब्ध विकल्पों में से इंटरनल मेमोरी चुन लें।

एंड्रॉयड सिस्टम वेब व्यू करें अपडेट

पहले से इंस्टॉल एप सिस्टम वेब व्यू को अपडेट कर आप समस्या का समाधान कर सकते हैं। प्ले स्टोर पर जाएं और एंड्रॉयड सिस्टम वेब व्यू सर्च करें। यदि कोई अपडेट है तो उसे अपडेट कर इंस्टॉल कर लें। फिर अपना फोन रीस्टार्ट करें और अब वह एप फिर से डाउनलोड करने की कोशिश करें, जिसे आप डाउनलोड करना चाह रहे थे। इसके अलावा कैशे और डेटा क्लियर करने से भी आपकी समस्या सुलझ सकती है।

ऑफलाइन रहकर भी करें विंडोज 10 अपडेट!

विश्व में सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला ऑपरेटिंग सिस्टम है विंडोज। पूरी दुनिया में लगभग 86 प्रतिशत कंप्यूटर विंडोज 10 पर चलते हैं। कुछ हफ्तों में नए अपडेट्स आ जाते हैं, ताकि इतना बड़ा यूजर बेस सुचारु रूप से काम करता रहे। पर कई बार समस्या तब आ जाती है, जब एक स्थायी कनेक्टिविटी नहीं बन पाती या फिर अपडेट्स सफल तरीके से डाउनलोड नहीं हो पाते। ऐसे में क्या यह संभव है कि अपडेट्स ऑफलाइन रहकर भी किये जा सकें। आइए अब जानते हैं कि ऐसा कैसे किया जा सकता है-

आमतौर पर कंप्यूटर तब भी काम करते रहते हैं, जब आप कोई भी अपडेट इंस्टॉल नहीं करते, पर इसका मतलब ये बिलकुल नहीं है कि आपको अपडेट नहीं करने चाहिए। अपडेट्स को इंस्टॉल करना जरूरी होता है, क्योंकि इनसे आपका सिस्टम, फाइल और डेटा बाहरी घुसपैठ से सुरक्षित रहता है। इन अपडेट्स में नए फीचर्स को अपग्रेड किया जाता है या ऐड किया जाता है ताकि हैकर्स और बग्स से आपके सिस्टम को बचाया जा सके। ये बग्स आपके सिस्टम को ठीक तरह से काम करने से रोकते हैं। इसलिए अपडेट्स को निश्चित ही डाउनलोड किया जाना चाहिए।

कैसे करें ऑफलाइन रहकर अपडेट

यदि आप धीमे नेटवर्क पर काम कर रहे हैं या फिर हाई-स्पीड इंटरनेट कनेक्शन अभी तक आपके क्षेत्र में नहीं पहुंच पाया है, तो माइक्रोसॉफ्ट ने एक नया फीचर निकाला है। इसकी मदद से आप अपडेट्स को लैन नेटवर्क पर उस कंप्यूटर के जरिए ले सकते हैं, जिस पर ये अपडेट्स आ चुके हैं। आप एक ही नेटवर्क पर दोनों कंप्यूटरों को कनेक्ट कर अपडेट ट्रांसफर कर सकते हैं।

इसके लिए सेटिंग्स से आप डिलिवरी ऑप्टिमाइजेशन सेटिंग्स पर जाएं, 'अलाओ डाउनलोड्स फ्रॉम अदर पीसी' पर टैप करें और फिर पीसी को लोकल नेटवर्क पर सेलेक्ट कर लें। आप चाहे तो इंटरनेट और लोकल नेटवर्क दोनों से डाउनलोड कर सकते हैं, ताकि इस प्रक्रिया को तेजी मिले। पहले, अपडेट्स के लिए मैनुअली चेक करें और फिर यह अपने आप डाउनलोड शुरू कर देगा।

डाउनलोडिंग

अपडेट डाउनलोड करके इंस्टॉल कर लें। एडवांस में अपडेट इंस्टॉल करने के लिए सेटिंग्स में जाएं, विंडोज की+आई प्रेस कर अपडेट्स और सिक्योरिटी सेलेक्ट कर लें। यदि यह रीस्टार्ट हो जाए या फिर रीस्टार्ट होने के लिए शेड्यूल हो जाए तो अपडेट्स को इंस्टॉल कर लें। जब आप इंटरनेट से कनेक्ट होंगे, तब अपडेट्स डाउनलोड कर लें। बाद में जब आप ऑफलाइन होंगे, तब भी आप इन्हें इंस्टॉल कर सकते हैं। किसी अन्य समय पर शेड्यूल करने के लिए शेड्यूल द रीस्टार्ट पर क्लिक करें और उसी दिन का कोई अन्य समय चुन लें।

साइकोलॉजिस्ट

सुलझाए मन की उलझनें

वर्तमान में तनाव हमारी दिनचर्या का एक हिस्सा बन चुका है। नौकरी, पारिवारिक जीवन, मानवीय संबंधों में खींचतान, आर्थिक तंगी या अन्य कारणों से, अधिकतर आबादी तनाव में जी रही है। इससे कई व्यवहारगत और समायोजन की समस्याएं जन्म लेती हैं, जिनसे बाहर निकलने का रास्ता सुझाते हैं साइकोलॉजिस्ट। बतौर साइकोलॉजिस्ट करियर की अपार संभावनाओं के बारे में बता रहे हैं करियर काउंसलर अशोक सिंह

लम्बे समय तक रहने वाला किसी भी तरह का तनाव बाद में डिप्रेशन का रूप ले सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट पर विश्वास किया जाए तो भारत की छह प्रतिशत से अधिक आबादी किसी न किसी रूप में इसी मानसिक तनाव/रोग से प्रभावित है।

अगर इसे संख्या की दृष्टि से देखा जाये तो यह सात करोड़ से अधिक की आबादी है। किसी भी देश की इतनी बड़ी आबादी का मानसिक विकार या रोग के कारण गैरउत्पादक होना वाकई चिंता का विषय कहा जा सकता है। इसके पीछे सबसे बड़ा कारण यह है कि ऐसे रोगियों को अपने डिप्रेशन अथवा मानसिक रोग का अहसास तक नहीं होता और एक कारण यह भी है कि इनकी काउंसलिंग/उपचार के लिए देश में मनोवैज्ञानिकों, मनोचिकित्सकों आदि की जबरदस्त कमी की स्थिति है।

क्या काम है मनोवैज्ञानिकों का

विभिन्न कारणों से विकसित मानसिक असंतुलन की स्थिति अथवा डिप्रेशन से ग्रस्त लोगों को उनकी परेशानियों से उबरने में सहायता करना और सोच की दिशा को सामान्य बनाने का भरसक प्रयास ऐसे विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है। यह उपचार मेडिकल साइंस से संचालित उपचार की भांति नहीं, बल्कि उनके व्यवहार यानी सोच, समझ और चिंतन की प्रक्रिया में धीरे-धीरे बदलाव लाकर करने की कोशिश की जाती है। इस क्रम में भावी जीवन के प्रति आशा जगाकर नए सिरे से शुरुआत करने के लिए उन्हें प्रेरित किया जाता है। समायोजन बेहतर करने, खोया हुआ स्वाभिमान और आत्मविश्वास वापिस लाने में भी ये मददगार सिद्ध होते हैं।

साइकोलॉजी और साइकोएनालिसिस में फर्क

मोटे तौर पर बात करें तो साइकोलॉजी या मनोविज्ञान विषय का लक्ष्य मानव मस्तिष्क द्वारा विभिन्न परिस्थितियों में लिए जाने वाले निर्णयों और व्यवहार का विश्लेषण करना है। यही नहीं इस क्षेत्र के काउंसलर सटीक निर्णय करने में भी एक हद तक सहायता करते हैं। दूसरी ओर साइकोएनालिसिस अपने आप में एक प्रणाली है, जिसमें निहित विभिन्न तकनीकों/पद्धतियों का इस्तेमाल कर यह

स्किल्स

- शांत और धैर्यवान व्यक्तित्व का होना बेहद जरूरी
- मानवीय भावनाओं पर आधारित सोच एवं रोगी के व्यवहार को समझने में दिलचस्पी
- लोगों को डिप्रेशन से उबरने में मदद करने का जज्बा
- समाज कल्याण की भावना
- मानव व्यवहार की सैद्धांतिक और व्यावहारिक बुनियादी समझ
- कम्यूनिकेशन स्किल्स
- रोगियों/तनावग्रस्त लोगों की बातें सुनने और विश्लेषण करने की क्षमता
- आहत भावनाओं को समझना और आत्मविश्वास जगाने की भावना

ट्रेनिंग

प्रशिक्षण के लिए ग्रेजुएशन स्तर का तीन वर्षीय अवधि का बीए (ऑनर्स) कोर्स उपलब्ध है। नामी संस्थानों में प्रवेश परीक्षा के माध्यम से एडमिशन दिया जाता है, जबकि अन्य संस्थान बारहवीं के अंकों के आधार पर तैयार मेरिट सूची से एडमिशन देते हैं। इस कोर्स में छात्रों को समय के साथ तमाम मनोवैज्ञानिकों द्वारा विकसित सिद्धांतों से परिचित करवाने का प्रयास किया जाता है। इसके सिलेबस में साइकोलॉजी, स्टैटिस्टिक्स, इंट्रोडक्शन टू काउंसलिंग, काउंसलिंग साइकोलॉजी, वोकेशनल गाइडेंस, चाइल्ड साइकोलॉजी, बिहेवियर साइंस, काउंसलिंग प्रोसेस, रिसर्च मैथडोलॉजी आदि पर आधारित पेपर्स होते हैं। इनमें प्रैक्टिकल पहलुओं पर भी ट्रेनिंग देने का प्रावधान है। कोर्स का उद्देश्य युवाओं को इस प्रोफेशन में एंट्री के लिए प्राथमिक स्तर पर ट्रेंड करना है। इसके बाद एमए (साइकोलॉजी) और पीएचडी (साइकोलॉजी) करने की सुविधा देश की कई यूनिवर्सिटीज में उपलब्ध है। हालांकि कई तरह के काउंसलिंग आधारित पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा कोर्स भी विभिन्न संस्थाएं चलाती हैं। ऐसी ट्रेनिंग का महत्व रोगियों की असल काउंसलिंग के दौरान पता चलता है। साइकोएनालिसिस में स्पेशियलाइजेशन भी इसी क्रम में किया जा सकता है। इग्नू सहित कई अन्य यूनिवर्सिटी में एमए (साइकोलॉजी) कोर्स ओपन यूनिवर्सिटी प्रणाली से भी संचालित किया जाता है।

जानने का प्रयास किया जाता है कि किन्हीं विशेष स्थितियों में मानव मस्तिष्क द्वारा किसी खास तरह का फैसला, अन्य विकल्पों के होने के बावजूद कैसे लिया गया। उन कारकों पर भी इस क्रम में गौर किया जाता है, जिनके आधार पर ऐसे व्यक्तियों द्वारा निर्णय लिए जाते हैं। इस दौरान व्यक्ति को हीन/असहाय होने की भावनाओं से उबारने का प्रयास भी किया जाता है। इतना ही नहीं किन्हीं मजबूरियों के कारण दबाई गयी इच्छाओं और आकांक्षाओं से उपजे डिप्रेशन को समझने और उसके प्रभाव का विश्लेषण करने की कोशिश काउंसलिंग के दौरान की जाती है। दूसरे शब्दों में अचेतन दिमाग में बसी बातों या यादों के महत्व को समझते हुए उपचार की दिशा का निर्धारण किया जाता है।

नियुक्तियां

इनके लिए हॉस्पिटल्स, एनजीओ, थेरेपी सेंटर्स, काउंसलिंग सेंटर्स, यूनिवर्सिटी, स्कूल और इंडस्ट्रियल यूनिट्स आदि में काउंसलर के तौर पर नौकरी के अवसर हो सकते हैं। इसके अलावा सोशल वेलफेयर संस्थाएं, डिफेन्स सेक्टर, कम्यूनिटी हेल्थ सेंटर्स, जेलों इत्यादि में भी ऐसे ट्रेंड लोगों को नियुक्त किया जाता है। करियर के शुरुआती दौर में किसी नामी मनोवैज्ञानिक/काउंसलर के साथ रहकर काफी कुछ प्रैक्टिकल ट्रेनिंग ली जा सकती है। इस प्रोफेशन को किताबी शिक्षा से नहीं, बल्कि मानसिक समस्याओं से ग्रस्त/विभिन्न बुरी आदतों या लत के शिकार लोगों आदि के उपचार के दौरान भली प्रकार से सीखा जा सकता है। बाद में अन्य प्रकार के स्पेशलाइजेशन सर्टिफिकेशन करके अपनी प्रोफेशनल योग्यता को बढ़ाया जा सकता है। इसके बाद स्वतंत्र रूप से काउंसलर के तौर पर प्रैक्टिस भी की जा सकती है। अमूमन ऐसे नामी और प्रतिष्ठित प्रोफेशनल्स की फीस काफी महंगी होती है।

कई तरह की हैं नौकरियां

टीचर, मनोवैज्ञानिक सलाहकार, करियर काउंसलर, साइकोलॉजिस्ट, मैरिज काउंसलर, चाइल्ड काउंसलर इत्यादि पदों पर काम करने के मौके मिल सकते हैं। विभिन्न इंडस्ट्रीज में भी वेलफेयर ऑफिसर के पदों पर इस तरह के लोगों को रखा जाता है। हालांकि इसके साथ अन्य सम्बंधित शैक्षिक योग्यता का होना भी जरूरी होता है। टीचिंग का भी क्षेत्र है, जहां पर ऐसे ट्रेंड लोगों की सेवाओं की जरूरत पड़ती है।

चुनौतियां

- हर तरह के मानसिक तनाव से ग्रस्त/डिप्रेशन की स्थिति वाले व्यक्ति के उपचार की अलग चुनौती
- रोगियों के परिवार की जल्द ठीक कर देने की अपेक्षा का तनाव
- सरकारी स्तर पर जॉब्स की सीमित व्यवस्था
- प्राइवेट हॉस्पिटल्स में प्रायः आकर्षक सैलरी नहीं

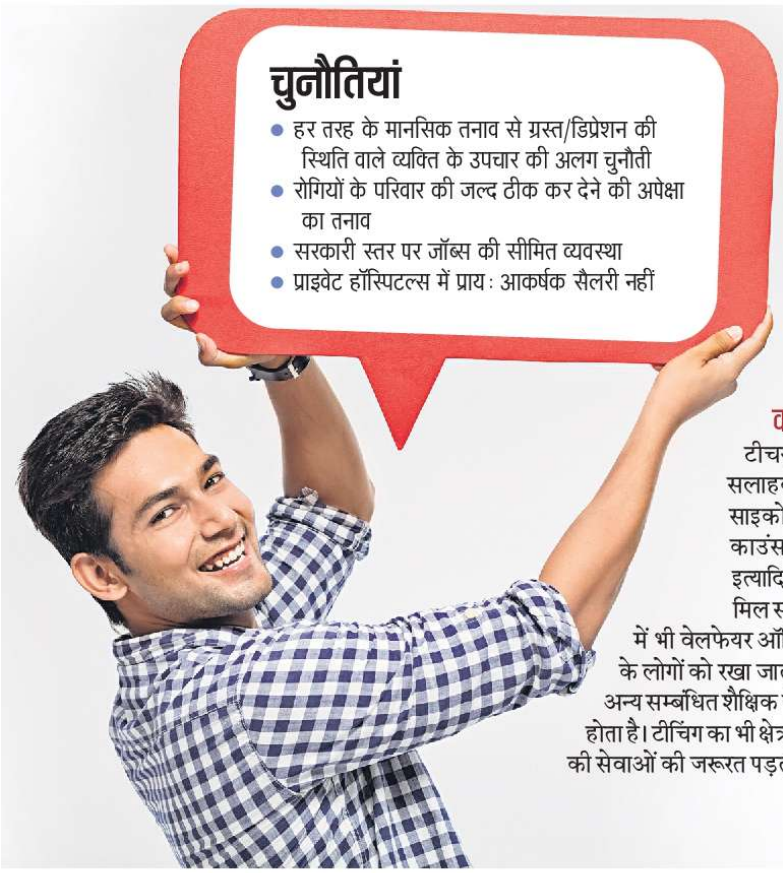

प्रमुख संस्थान

- दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली
  http://www.du.ac.in
- यूनिवर्सिटी ऑफ लखनऊ, लखनऊ
  http://www.lkouniv.ac.in
- अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़
  https://www.amu.ac.in
- दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा
  https://www.dei.ac.in/dei
- पटना यूनिवर्सिटी, पटना
  https://www.patnauniversity.ac.in

गुरु मंत्र

यह आम प्रोफेशन नहीं है। इसमें सॉफ्ट स्किल्स की ज्यादा जरूरत पड़ती है। उपचार के दौरान ऐसे प्रभावित लोगों का विश्वास जीतना और उनमें सकारात्मक भावना विकसित करना, उनके आत्मविश्वास को दोबारा जीवित करने के लिए उनके दुखों और परेशानियों को साझा करना, उनके मन की उलझनों को सुलझाने में मदद करना, जैसे काम बहुत आवश्यक होते हैं। इसलिए काफी हद तक यह प्रोफेशन मानवीय भावनाओं के महत्व को समझने और किन्हीं कारणों या दुर्घटनाओं से मन पर लगी ठेस को सहानुभूतिपूर्वक मिटाने पर भी आधारित है। इसका सकारात्मक प्रभाव रोगियों में नए उल्लास और जीवन में आगे बढ़ने की इच्छा के तौर पर सामने आने लगता है। इसलिए मानवीय संवेदनाओं को अपने व्यवहार में लाना ऐसे प्रोफेशनल्स को सफलता दिलाने में अहम भूमिका निभाता है।

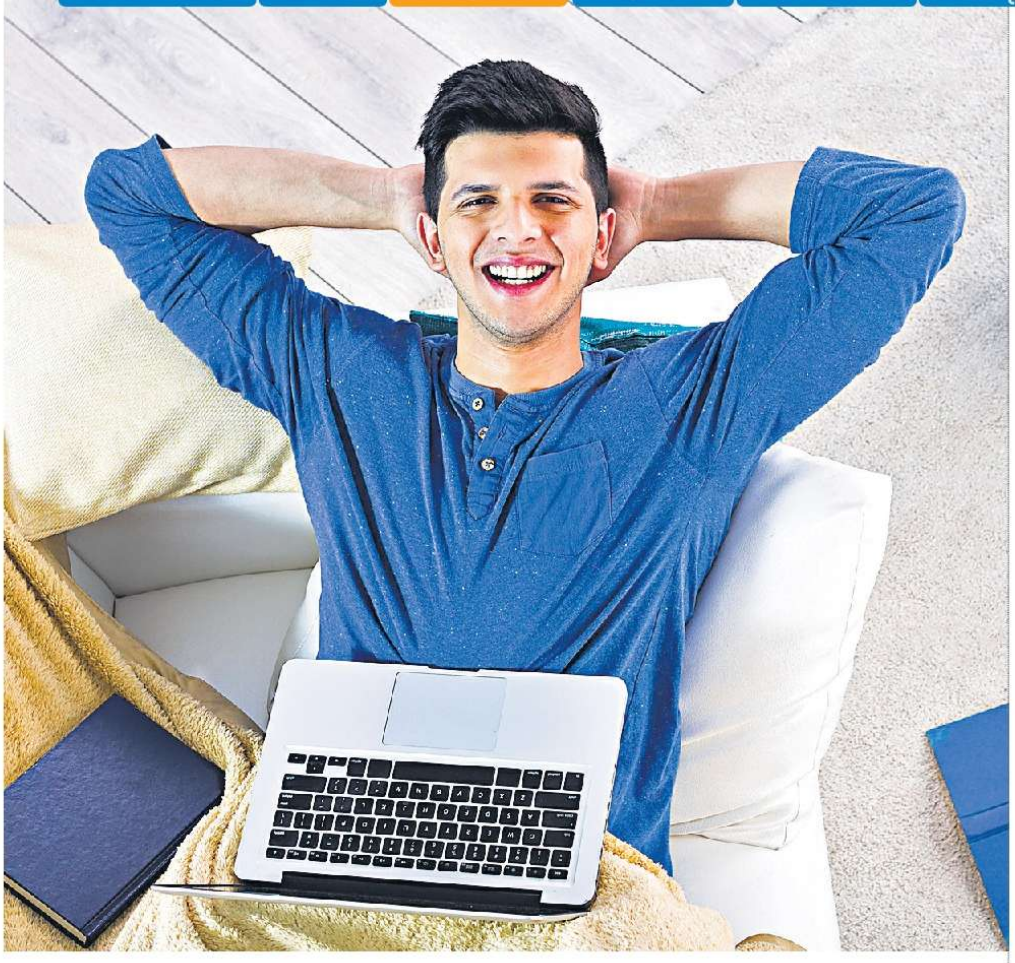

बैटरी स्टोरेज सीखें ऑनलाइन

तकनीक की दुनिया में हर काम पावर सप्लाई से होता है। यंत्रों और मशीनों के अत्यधिक इस्तेमाल में बिजली की खपत होती है। ऊर्जा की मांग को पूरा करने के लिए बैटरी स्टोरेज एक अच्छा रास्ता है। इस रास्ते में आपके लिए व्यवसाय के नए आयाम भी मौजूद हैं। बस आपको इसके लिए इंटरनेट पर मौजूद बैटरी स्टोरेज का कोर्स करना होगा। कैसे, बता रही हैं **स्वाति शर्मा**

रोजमर्रा की जिंदगी में ऊर्जा की अच्छी-खासी खपत होती है। पंखा, एसी, फ्रिज जैसे उपकरणों का इस्तेमाल तो जीवनशैली का अभिन्न हिस्सा हो गया है। आधुनिकता की दौड़ भाग में और भी कई मशीनें और गैजेट एक के बाद एक शामिल होते जा रहे हैं। मनुष्य की ऊर्जा में बचत करने वाले ये सभी उपकरण असल में खुद जरूरत से ज्यादा ऊर्जा का इस्तेमाल करते हैं। ये ऊर्जा उनको बिजली से मिलती है, जिसे बनाने में प्राकृतिक ऊर्जा की काफी खपत होती है। बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए ये प्रकृति से सीधे तौर पर समझौता है। इसके बचाव का एक बेहतर विकल्प है -बैटरी स्टोरेज। बैटरी में ऊर्जा का भंडारण कर इससे कई कार्य किए जा सकते हैं, जिनसे बिजली बचाने के साथ ही ऊर्जा की बढ़ती मांग को पूरा किया जा सकता है। इकोफ्रेंडली जीवन के लिए एक सहयोगी की भूमिका निभाने के साथ ही आने वाले दौर में इसकी बढ़ती मांग की ओर भी यह इशारा करता है। अगर आप तकनीक की दुनिया में अपने करियर की आजमाइश करना चाहते हैं तो बैटरी स्टोरेज आपके लिए एक बेहतर विकल्प है। इसके लिए आपको ऑनलाइन मौजूद कोर्स करना होगा।

क्या सीखेंगे

कोर्स करने के बाद आपको बिजली बाजार में चार अलग-अलग प्रकार के अनुप्रयोगों के लिए बैटरी स्टोरेज करना आएगा। इसके अलावा उन बाधाओं को दूर करना भी सीख जाएंगे, जो बैटरी स्टोरेज कार्य में बाधा डालकर उसके मार्केट को धीमा कर रही हैं। बैटरी स्टोरेज की विभिन्न तकनीकी विशेषताओं का अवलोकन करना सीखेंगे। इसके अलावा आप यह भी समझ पाएंगे कि किस प्रकार आप घरेलू, उद्योग या ग्रिड की चरम मांग को घटाने के लिए बैटरी स्टोरेज कर सकते हैं और इसके लिए कौन सी सेवाएं प्रदान करनी होंगी। बैटरी स्टोरेज कर आप अपने घर व उद्योगों के बिजली के बिलों को कम कर सकते हैं।

कोर्स : बैटरी स्टोरेज टेक्नोलॉजी : अपॉर्चुनिटीज एंड यूसेज

शुरू होने की तारीख : 07 अक्तूबर 2019
प्रमाण पत्र की फीस : कोर्स निःशुल्क है, लेकिन अन्य सुविधाओं के लिए निश्चित राशि जमा करनी होगी।
अवधि: तीन हफ्ते

अधिक जानकारी के लिए क्लिक करें :
https://www.Futurelearn.com/courses/battery-storaGe-applications

किसके लिए है ये कोर्स

तकनीक सीखने में रुचि रखने वाला कोई भी व्यक्ति इस कोर्स को कर सकता है। इस कोर्स के जरिए आप ऊर्जा के क्षेत्र में अपना योगदान दे सकते हैं। बैटरी स्टोरेज कर बिजली की खपत को घटाते हुए ऊर्जा की मांग को पूरा किया जा सकता है, जिससे पर्यावरण को भी मदद मिलेगी। कोर्स करके कोई भी छात्र या व्यवसायी बैटरी के व्यवसाय को आगे बढ़ा सकता है।

ये है सिलेबस

कोर्स को तीन सप्ताह में बांटा गया है। इसके पाठ्यक्रम में छह विषयों को कवर किया गया है। पहले विषय में यूरोपीय संघ के बिजली उद्योगों के बारे में पढ़ेंगे। इसमें आपको उनके लचीलेपन, मांग और बैटरी भंडारण की भूमिका और आवश्यकता के बारे में पढ़ाया जाएगा। इसके बाद आप बैटरी भंडारण प्रौद्योगिकी के बारे में जानेंगे। इसमें उसकी विशेषताओं, क्षमताओं और सीमाओं के बारे में बात होगी। तीसरे विषय के अंतर्गत बैटरी भंडारण के पैमाने जानेंगे। इसके बाद बैटरी भंडारण के मीटर विषय के अंतर्गत कोर्स आगे बढ़ेगा। बैटरी भंडारण का ऑफ ग्रिड अनुप्रयोग कोर्स का पांचवां भाग है। और आखिरी भाग में आप गतिशीलता में बैटरी भंडारण विषय पढ़ेंगे।

कैसे होगी पढ़ाई

कोर्स करने के लिए आप दिए गए लिंक पर एनरोल कर सकते हैं। कोर्स दी गई तारीख से शुरू होगा। तीन सप्ताह चलने वाले कोर्स में आपको प्रति सप्ताह तीन घंटों का समय देना होगा। यूं तो कोर्स निःशुल्क है, लेकिन यदि आप कोर्स से अन्य लाभ उठाना चाहते हैं तो आपको फीस जमा करनी होगी। इसकी पूरी जानकारी आपको दिए हुए लिंक पर मिल जाएगी। कोर्स में एनरोल करते समय आपसे ईमेल आईडी पूछी जाएगी। कोर्स शुरू होते ही आपकी आईडी पर पाठ्य सामग्री मिलना शुरू हो जाएगी। इसे आप अपनी सुविधा से कभी भी पढ़ सकते हैं।

सीटीईटी दिसंबर 2019

हर सेक्शन पर बनाएं मजबूत पकड़

देश में हर साल हजारों की संख्या में सरकारी स्कूलों में शिक्षकों की नियुक्तियां होती हैं। कुछ नियुक्तियां राज्य स्तर पर तो कुछ केंद्र सरकार के अधीन आने वाले (केंद्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय, तिब्बती स्कूलों व राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली) विद्यालयों के लिए होती हैं। सरकारी नियमानुसार इन स्कूलों में टीचर बनने के लिए जरूरी है कि उम्मीदवार सीबीएसई द्वारा कराई जाने वाली केंद्रीय पात्रता परीक्षा (सीटीईटी) में सफलता हासिल करें। इस परीक्षा में उम्मीदवारों की भारी भीड़ उमड़ती है तथा यह परीक्षा साल में दो बार आयोजित की जाती है। इसमें आवेदन प्रक्रिया शुरू हो चुकी है तथा पूरी प्रक्रिया ऑनलाइन है। फॉर्म भरने के बाद उनको एक बार उसमें संशोधन का भी मौका मिलता है। उम्मीदवार चाहे तो एक पेपर या फिर दोनों पेपरों में आवेदन कर सकता है।

क्वालिफाइंग परीक्षा

जो उम्मीदवार कक्षा एक से पांच तक पढ़ाना चाहते हैं, उनके लिए पहला पेपर, जबकि कक्षा छह से आठवीं तक के छात्रों को पढ़ाने के लिए दूसरा पेपर उत्तीर्ण करना अनिवार्य है। यह परीक्षा क्वालिफाइंग स्तर की है तथा इसमें उम्मीदवारों को 60 प्रतिशत अंक लाना अनिवार्य है। इस परीक्षा की कठिनता का स्तर अधिक होता है।

सात साल की होगी वैधता

यह सर्टिफिकेट सिर्फ सीबीएसई और केंद्रीय विद्यालयों में निकलने वाले शिक्षकों की नियुक्ति के लिए मान्य है। इसकी अवधि सात साल के लिए होती है। वैसे उम्मीदवार चाहें तो बेहतरी अथवा अच्छे अंक के लिए बीच-बीच में सीटीईटी परीक्षा में बैठ सकते हैं।

तैयारी के 5 आवश्यक टिप्स

- सिलेबस को टाइम टेबल के हिसाब से बांट लें
- हर सेक्शन को बराबर का महत्व दें
- कठिन सेक्शन पर अपेक्षाकृत समय बढ़ा लें
- अंतिम दिन में सिर्फ रिवीजन पर जोर दें
- सिद्धांतों की स्पष्टता रखें।

अलग-अलग योग्यता की दरकार

इसमें कक्षा एक से पांचवीं तक का शिक्षक बनने के लिए उम्मीदवार को सीनियर सेकंडरी अथवा इसके समकक्ष परीक्षा न्यूनतम 50 प्रतिशत अंकों के साथ और प्रारंभिक शिक्षा में दो वर्षीय डिप्लोमा के अन्तिम वर्ष में शामिल होने वाले अथवा उत्तीर्ण उम्मीदवार योग्य माने जाते हैं। इसके अलावा सीनियर सेकंडरी कक्षा में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंकों के साथ और शिक्षा में 2-वर्षीय डिप्लोमा (विशेष शिक्षा) के अंतिम वर्ष में शामिल होने वाले अथवा उत्तीर्ण भी इसमें आवेदन कर सकते हैं। जबकि कक्षा छह से आठवीं तक के स्कूलों में शिक्षक बनने के लिए के लिए होने वाली परीक्षा में वही छात्र रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं, जिन्होंने ग्रेजुएशन की परीक्षा 50 प्रतिशत अंकों के साथ पास कर ली हो और जिनके पास बीएड की डिग्री हो। बीएड अंतिम वर्ष की परीक्षा में बैठने वाले उम्मीदवार भी सीटीईटी में बैठ सकते हैं।

परीक्षा से जुड़ी जानकारी

इसमें प्रारम्भिक व उच्च वर्ग के लिए एक-एक पेपर होते हैं। प्रत्येक पेपर में कुल 150 प्रश्न पूछे जाएंगे तथा प्रत्येक प्रश्न के लिए एक अंक निर्धारित है। प्रश्नों का स्वरूप बहुविकल्पीय होगा तथा प्रत्येक के चार विकल्प दिए होंगे। पहला पेपर पांच सेक्शन पर आधारित होता है। प्रत्येक सेक्शन के 30-30 अंक निर्धारित होते हैं। दूसरे पेपर में चार ही सेक्शन होते हैं। इसमें तीन सेक्शन 30-30 अंक के जबकि एक सेक्शन 60 अंक का होता है। यह सेक्शन आर्ट व साइंस ग्रुप के लिए अलग-अलग होता है। दोनों पेपरों के लिए ढाई-ढाई घंटे का समय निर्धारित होता है। प्रश्नों का माध्यम हिन्दी व अंग्रेजी दोनों होता है।

बच्चों की जानकारियों पर फोकस रहें

बाल विकास एवं मनोविज्ञान के सेक्शन में 11-14 साल के आयु वर्ग के बच्चों पर ज्यादा प्रश्न पूछे जाते हैं। इसमें मुख्य रूप से बच्चों के क्रमबद्ध विकास, विकास के लिए आवश्यक चीजें, शैक्षिक मनोविज्ञान, भाषा एवं विचार, तार्किक शक्ति तथा सामाजिक संरचना आदि पर आधारित होते हैं।

सिलेबस के अनुसार विभिन्न विषयों को अच्छे से तैयार करना जरूरी है। इस परीक्षा में निगेटिव मार्किंग का प्रावधान है। इसलिए उम्मीदवारों को जिन प्रश्नों पर भ्रम की स्थिति बन रही हो, उसे छोड़कर आगे बढ़ जाएं। बाद में समय मिलते ही उन्हें दोबारा हल करने का प्रयास करें।

प्रस्तुति : संजीव कुमार सिंह

महत्वपूर्ण तिथियां

परीक्षा की तिथि - 08 दिसंबर, 2019

ऑनलाइन आवेदन की अं. ति.- 18 सितंबर, 2019

परीक्षा : एक नजर

पेपर-1 (प्राथमिक स्तर) की संरचना

सेक्शन	प्रश्नों की संख्या	कुल अंक
बाल विकास एवं मनोविज्ञान	30	30
भाषा - एक (हिन्दी)	30	30
भाषा - दो (अंग्रेजी)	30	30
गणित	30	30
पर्यावरणीय अध्ययन	30	30
कुल	150 प्रश्न	150 अंक

पेपर-2 (उच्च प्राथमिक स्तर) की संरचना

सेक्शन	प्रश्नों की संख्या	कुल अंक
बाल विकास एवं मनोविज्ञान	30	30
भाषा - एक (हिन्दी)	30	30
भाषा - दो (अंग्रेजी)	30	30
गणित व विज्ञान	60	60
अथवा		
सामाजिक विज्ञान	60	60
कुल	150 प्रश्न	150 अंक

अधिक जानकारी के लिए वेबसाइट www.ctet.nic.in विजिट कर सकते हैं।

सेंट्रल एलिजिबिलिटी टेस्ट के लिए उपयोगी जानकारी के साथ एसएसबी की तैयारी में मददगार सोशल मीडिया की जानकारी दी जा रही है आज के अंक में। इसके साथ ही साइकिल से बने बेहतरीन रिकॉर्ड और कुछ अन्य रोचक जानकारियों से रूबरू करा रहे हैं
परितोष राज

तस्वीर में खबर

ट्रेन और कार से तेज साइकिल चला बनाया रिकॉर्ड

आम तौर पर लोग साइकिल काफी आराम से चलाते हैं, लेकिन एक शख्स ने ट्रेन और कार की रफ्तार से भी तेज साइकिल चलाकर दुनियाभर के लोगों को हैरत में डाल दिया। इंग्लैंड के रहने वाले 45 साल के साइक्लिस्ट नील कैंपबेल ने 280.55 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से साइकिल चलाकर 24 साल पुराना विश्व रिकॉर्ड तोड़ दिया। साथ ही अपने नाम एक नया विश्व रिकॉर्ड कर लिया। नील ने इस काम के लिए साइकिल को खासतौर पर तेज गति से चलाने के लिए तैयार करवाया था। नील से पहले यह रिकॉर्ड नीदरलैंड के साइक्लिस्ट फ्रेड रोंपेलबर्ग के नाम दर्ज था। उन्होंने साल 1995 में 268.76 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से साइकिल चलाकर रिकॉर्ड बनाया था। उन्होंने भी एक तेज रफ्तार कार की बराबरी की थी।

वेबसर्च

www.successcds.net

- देश-दुनिया के बेहतरीन कॉलेजों में नामांकन कराने की चाहत रखने वाले तमाम छात्रों के लिए यह वेबसाइट काफी उपयोगी साबित हो सकती है।
- इस वेबसाइट पर बैचलर, मास्टर डिग्री, इंजीनियरिंग, मेडिकल, लॉ, बीएड, मैनेजमेंट, पीजी डिप्लोमा, सर्टिफिकेट कोर्स समेत तमाम तरह के पारंपरिक और प्रोफेशनल कोर्स में नामांकन के बारे में जानकारी दी जाती है।
- किस कॉलेज में कब नामांकन के लिए अधिसूचना जारी हुई है, नामांकन की प्रक्रिया क्या है, उसके लिए किन योग्यताओं की जरूरत है, अंतिम तिथि क्या है आदि सभी जरूरी जानकारियां भी यहां दी जाती हैं।
- कॉलेजों में होने वाले नामांकन की अधिसूचना के साथ-साथ देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों और कॉलेजों की सूची भी दी गई है।
- इन सबके साथ-साथ दुनिया की कुछ प्रतिष्ठित यूनिवर्सिटी और वहां के बेहतरीन कोर्स के बारे में भी इस वेबसाइट से जानकारी हासिल की जा सकती है।

मोबाइल एप

Target SSB

- सर्विसेज सेलेक्शन बोर्ड (एसएसबी) के इंटरव्यू की तैयारी करने वाले छात्रों के लिए यह मोबाइल एप काफी मददगार हो सकता है।
- पांच दिन तक चलने वाले एसएसबी इंटरव्यू को काफी कठिन माना जाता है लेकिन उसमें बेहतर प्रदर्शन करने के आसान और व्यावहारिक उपाय इस एप्लिकेशन में बताए गए हैं।
- पहले दिन होने वाले पीपीडीटी और दूसरे दिन होनेवाले साइकोलॉजी इंटरव्यू के बारे में काफी विस्तार से समझाया गया है।
- तीसरे और चौथे दिन होने वाले ग्रुप टास्क इंटरव्यू और पांचवे दिन होने वाले कॉन्फ्रेंस पीएबीटी के लिए भी काफी उपयोगी जानकारी दी गई है।
- डब्ल्यूएटी प्रैक्टिस सेट, एसडी प्रैक्टिस सेट, पर्सनल इंटरव्यू टिप्स, ग्रुप डिस्कशन टिप्स, न्यूज, इवेंट्स और इंटरव्यू से संबंधित काफी उपयोगी जानकारी दी गई है।

मौके

ट्रेड अप्रेंटिस के लिए आवेदन

- हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड ने ट्रेड अप्रेंटिस के 129 पदों पर नियुक्ति के लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए हैं।
- इन पदों पर आवेदन के लिए एनसीवीटी या एससीवीटी से मान्यता प्राप्त किसी संस्थान से फिटर, इलेक्ट्रिशियन, इलेक्ट्रॉनिक्स मेकैनिक, इंस्ट्रूमेंट मेकैनिक या मशीनिस्ट ट्रेड में फुल टाइम आईटीआई अनिवार्य है।
- आवेदन करने के लिए आयु 14 से 30 वर्ष के बीच होनी चाहिए। आयु-सीमा की गणना 20 अगस्त 2019 के आधार पर की जाएगी। आरक्षित वर्ग के आवेदकों को अधिकतम आयु सीमा में नियमानुसार छूट दी जाएगी।
- आवेदकों का चयन मैट्रिक और आईटीआई में प्राप्त अंकों के आधार पर बनी मेधा सूची के जरिये किया जाएगा। चुने गए आवेदकों को नियमानुसार स्टाइपेंड दिया जाएगा।
- आवेदन से संबंधित जानकारी विस्तार से जानने के लिए और आवेदन करने के लिए वेबसाइट < https://hindustancopper.com/> पर क्लिक करें।
- आवेदन करने की अंतिम तिथि 19 सितंबर 2019 है।

पद्मनाभन गोपालन

कामयाबी की कहानी

सामाजिक कार्य के लिए मिला सम्मान

एक कहावत है, कर भला तो हो भला। यह बात युवा सोशल एंटरप्रिन्योर पद्मनाभन गोपालन पर पूरी तरह से सही साबित हुई है। सामाजिक कार्य करने वाले पद्मनाभन को प्रतिष्ठित राष्ट्रमंडल युवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इस पुरस्कार के लिए आए सैकड़ों नामों के बीच से उन्हें चुना गया।

- तमिलनाडु के रहने वाले 26 वर्षीय सोशल एंटरप्रिन्योर पद्मनाभन को प्रौद्योगिकी आधारित खाद्य बचाव संगठन चलाने के लिए यह पुरस्कार दिया गया है।
- पद्मनाभन ने रोजाना बर्बाद होने वाले अतिरिक्त भोजन को लोगों के घरों से इकट्ठा कर जरूरतमंदों के बीच बांटने के लिए एक अनोखी प्रणाली विकसित की है। साथ ही भुखमरी को खत्म करने के संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) को पाने की दिशा में अहम योगदान दिया है।
- भुखमरी को खत्म करने के इस अहम काम को करने के लिए 'नो फूड वेस्ट' नाम से संस्थान चला रहे हैं।
- कोयंबटूर के गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी से उन्होंने बैचलर ऑफ प्रोडक्शन इंजीनियरिंग की डिग्री हासिल की है। अपने कॉलेज के दिनों के दौरान, पद्मनाभन ने एक ग्रीन क्लब शुरू किया था और पर्यावरण के रख-रखाव और बचाव के लिए निरंतर काम करते रहे हैं।
- आमतौर पर लोग हर दिन कुछ न कुछ खाना बर्बाद करते हैं, जबकि वह भूखे लोगों के काम आ सकता है। पद्मनाभन भोजन बर्बाद करने की खामियों के बारे में स्कूलों में जागरूकता अभियान चलाते हैं और लोगों को खाना बर्बाद करने से रोकते हैं।
- पद्मनाभन अपने संस्थान के जरिये अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं और स्थानीय अधिकारियों के साथ मिलकर समारोहों एवं रेस्तरां में बचे खाने को हर दिन जमा करते हैं और जरूरतमंद लोगों के बीच बांटने का काम करते हैं। इस काम के लिए वह खुद तैयार की गई तकनीक का इस्तेमाल करते हैं। इससे बचे खाने का प्रबंधन आसानी से हो जाता है।
- पद्मनाभन के इस अनूठे अभियान से असहाय और जरूरतमंद लोगों को काफी मदद मिली है। उन्हें खाना मुहैया कराया जा सका है। दूसरी तरफ लोगों में खाने को बर्बाद नहीं करने के संबंध में उल्लेखनीय जागरूकता भी आई है।

जनरल नॉलेज

सुबह और शाम सूरज क्यों दिखता है बड़ा

- अक्सर आपने गौर किया होगा कि सूर्योदय और सूर्यास्त के समय यानी की सुबह और शाम के समय सूरज का आकार काफी बड़ा दिखता है, लेकिन दिन के समय यह छोटा दिखता है।
- सूर्य हमारे सौरमंडल का सबसे बड़ा पिंड है और धरती पर प्राकृतिक ऊर्जा का सबसे बड़ा स्रोत है। सूर्य का व्यास लगभग 13 लाख 90 हजार किलोमीटर है, जो धरती के व्यास से लगभग 109 गुना अधिक है।
- सूर्य के प्रकाश को धरती तक पहुंचने में 8.3 सेकंड का समय लगता है। जब सूर्योदय और सूर्यास्त होता है तो उस समय उसकी किरणें हल्की होती हैं और किरणों के हल्के होने के कारण हमें सूरज पूरा-पूरा दिखाई देता है, लेकिन जब सूर्य की रोशनी पूरी होती है तो वह हमें पूरा दिखाई नहीं देता है।
- दिन के समय हमें केवल सूरज का मध्य भाग ही दिखाई देता है, इसलिए हमें उसका आकार छोटा दिखाई देता है।

माइंड गेम

306. तर्क के आधार पर बताएं कि खाली जगह में कौन–सा पैटर्न आएगा?

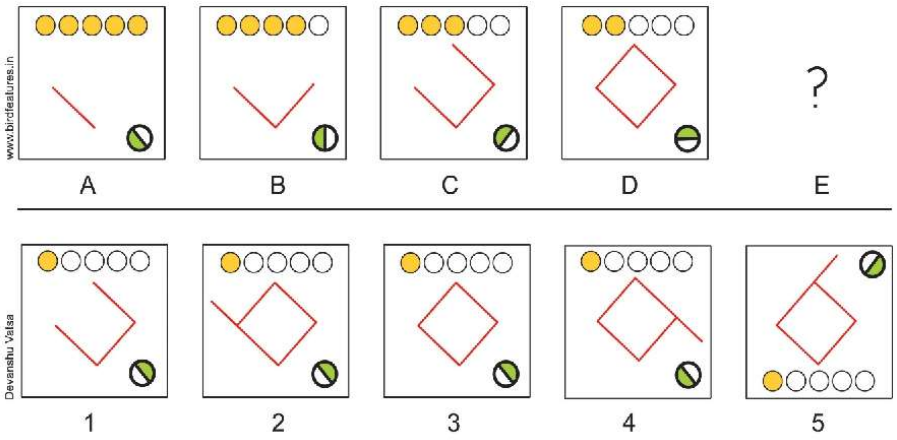

उत्तर: नंबर 3 वाला पैटर्न।

अंकयोग – 360

					30
	1		7		28
6				7	26
	1	4			21
3				6	20
	3		1		16
29	10	18	23	31	20

अंकयोग 359 का उत्तर

					18
8	4	5	7	1	25
2	3	6	9	5	25
1	2	4	3	8	18
9	1	3	5	7	25
3	7	1	2	4	17
23	17	19	26	25	24

खेलने के नियम

इस पहेली में आपको सफेद रिक्त खानों में सही अंक भरने हैं। रंगीन खानों में लिखे अंक सफेद खानों के ऊपर से नीचे, बाएं से दाएं और तिरछे खानों के अंकों के योग हैं। सफेद खानों में आप 1 से 9 तक के अंक ही प्रयोग में ला सकते हैं। उत्तर अगले अंक में देखें।

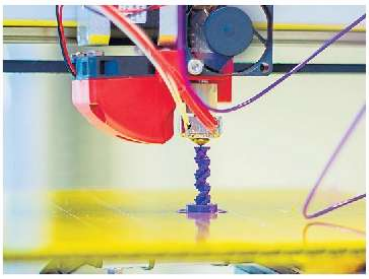

प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी में करें डिप्लोमा कोर्स

किसी भी देश की करेंसी से लेकर पैकेजिंग, विज्ञापन, किताबों और अखबारों तक के प्रकाशन में प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल किया जाता है। इस टेक्नोलॉजी के बिना लाखों-करोड़ों की संख्या में उपरोक्त मुद्रित सामग्रियों को अधिकाधिक लोगों के लिए उपलब्ध करवाना नामुमकिन ही कहा जा सकता है।

समय के साथ प्रिंटिंग की नई-नई तकनीकें अस्तित्व में आ रही हैं। इनके प्रयोग से प्रिंटिंग की लागत में कमी आ रही है, गुणवत्ता बेहतर हो रही है और प्रिंटिंग में लगने वाला समय भी कम होता जा रहा है। उदाहरण के लिए अखबार के प्रकाशन को ही लें, तो हमें मालूम है कि रातोंरात लाखों की संख्या में रंगीन अखबार छप जाते हैं और सुबह होने तक तमाम घरों में पहुंच भी जाते हैं।

प्रिंटिंग ने अब तक हाथ से डिजिटल तक का लंबा सफर तय किया है। आने वाले समय में और तेज बदलाव इस क्षेत्र में देखने को मिलेंगे। इस कड़ी में थ्री डी प्रिंटिंग इस क्षेत्र की नई उपलब्धि कही जा सकती है।

क्या है प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी

पहले प्रिंटिंग का मतलब समझना जरूरी है। प्रिंटिंग से आशय है किसी भी तरह के टेक्स्ट या इमेज का कागज, कपड़े या अन्य पदार्थ पर बड़ी संख्या में इस्तेमाल। प्रिंट करने के लिए ही विभिन्न प्रकार की मुद्रण तकनीकें प्रयोग में लाई जाती हैं। दूसरी ओर, प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी बुनियादी तौर पर इंजीनियरिंग की ही एक महत्वपूर्ण शाखा है, जिसमें छपाई से संबंधित मशीनों के प्रोटोटाइप तैयार करना, छपाई की टेक्नोलॉजी में सुधार करना तथा छपाई से संबंधित अन्य सामग्रियों के बारे में अध्ययन और उनके विकास का कार्य किया जाता है।

स्किल्स

- विज्ञान विषयों में रुचि
- टेक्नोलॉजी के प्रति लगाव
- भाषा पर पकड़
- प्रिंट डिजाइनिंग की समझ
- कंप्यूटर संचालन का कौशल
- मेहनती

प्रशिक्षण

यह तीन वर्षीय डिप्लोमा कोर्स है। विज्ञान विषयों के साथ बारहवीं कक्षा की परीक्षा पास करने के बाद कोई भी यह डिप्लोमा कोर्स कर सकता है। इस कोर्स के सिलेबस में मैथ्स, कैमिस्ट्री, फिजिक्स, कंप्यूटर, मैनेजमेंट आदि शामिल हैं। यही नहीं, कोर्स के दौरान प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी से जुड़े विविध आयामों, विभिन्न प्रकार की प्रिंटिंग प्रणालियां, प्रिंटिंग से संबंधित मशीनों की रूपरेखा और निर्माण के बारे में विस्तारपूर्वक सैद्धांतिक और व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है।

इसके अतिरिक्त ग्राफिक डिजाइनिंग, पैकेजिंग टेक्नोलॉजी, स्क्रीन प्रिंटिंग आदि से भी छात्रों को प्रशिक्षण के दौरान अवगत करवाया जाता है। तीन वर्षीय डिप्लोमा कोर्स करने के बाद अगर आप चाहें तो बीटेक (प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी) स्तर के कोर्स में भी दाखिला ले सकते हैं।

नौकरियां

प्रशिक्षण के बाद प्रिंटिंग प्रेस, पब्लिकेशन हाउस, न्यूजपेपर पब्लिकेशन, कॉलेज-यूनिवर्सिटी प्रेस, गवर्नमेंट प्रिंटिंग प्रेस, विज्ञापन एजेंसियों, पैकेजिंग इंडस्ट्री, डिजिटल प्रिंटिंग कंपनियों आदि में जॉब के अवसर मिल सकते हैं। विभिन्न सरकारी विभागों की प्रकाशन इकाइयों में बाकायदा प्रोडक्शन असिस्टेंट, प्रोडक्शन ऑफिसर, चीफ प्रोडक्शन ऑफिसर आदि के तौर पर नियुक्तियां मिल सकती हैं। प्रिंटिंग क्वालिटी कंट्रोलर, प्रिंटिंग डिजाइनर, प्रिंटिंग ऑफिसर आदि जैसे रोजगार के अवसर प्राइवेट कंपनियों में तलाशे जा सकते हैं। प्रिंटिंग उपकरण बनाने वाली कंपनियों में ऐसे प्रशिक्षित लोगों के लिए जॉब के अवसर होते हैं। कुछ वर्षों के कार्यानुभव के बाद सेल्फ एम्प्लॉयमेंट के बारे में भी सोचा जा सकता है।

प्रमुख संस्थान

- गवर्नमेंट इंस्टीट्यूट ऑफ प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी, मुंबई
  http://www.gipt.ac.in
- नार्दर्न रीजनल इंस्टीट्यूट ऑफ प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी, प्रयागराज
  http://nript.ac.in
- पूसा इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, दिल्ली
- गुजरात टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद
  https://www.gtu.ac.in

गुरुमंत्र

इस प्रोफेशन में सफल होने के लिए सर्वाधिक जरूरी है प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी की नई तकनीकों और मशीनों के बारे में जानकारी से खुद को अपडेट रखना। इसके लिए इस क्षेत्र के लोगों से लगातार संपर्क बनाए रखना जरूरी है। प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी से संबंधित प्रदर्शनियों, कार्यशालाओं इत्यादि में शामिल होने से भी ताजा जानकारियां मिलती रहती हैं। अन्य प्रोफेशन की तरह इस क्षेत्र में भी टेक्नोलॉजी में तेज बदलाव देखा जा सकता है। पुरानी टेक्नोलॉजी के सहारे अधिक समय तक स्वयं को इस क्षेत्र में बनाए रखना मुश्किल होगा।

-अशोक सिंह, सीनियर करियर कंसल्टेंट

माइनिंग इंजीनियरिंग के उम्दा संस्थान

खदानों से खनिज और धातुओं की खुदाई किस प्रकार से आसान बनाई जा सकती है? क्या किया जाए कि खदानों से बिना नुकसान ज्यादा से ज्यादा खनन हो सके? इन सवालों का जवाब माइनिंग इंजीनियरिंग से ही मिल सकता है। इंजीनियरिंग की इस विधा से जुड़े बेहतरीन कॉलेजों के बारे में बता रही हैं चयनिका निगम-

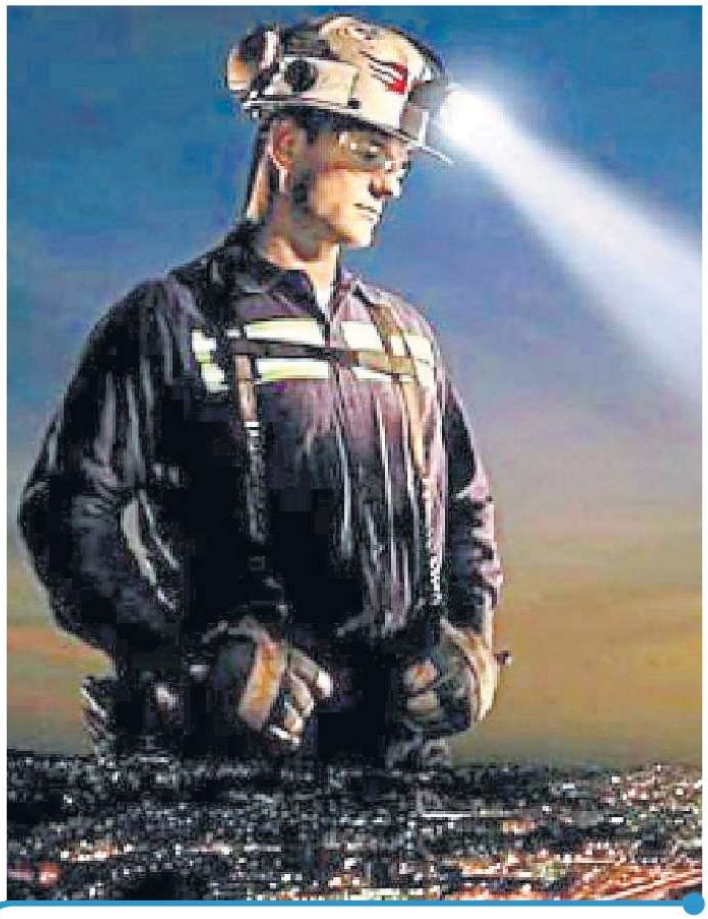

माइनिंग इंजीनियरिंग एक ऐसा पेशा है, जिसमें खदानों की रूपरेखा पर ध्यान दिया जाता है, ताकि कोयला या फिर धातु ज्यादा आसान तरीके से निकाला जा सके। इंजीनियरिंग के इस खेमे वाले युवा विशेषज्ञता भी हासिल करते हैं। उन्हें खनिज या धातु जैसे कोयला या लोहा निकालने के हिसाब से खदान से जुड़ी ट्रेनिंग दी जाती है। कुछ माइनिंग इंजीनियर्स जियोलॉजिस्ट के साथ मिलकर कच्ची धातु ढूंढ़ने का काम भी करते हैं। इसके अलावा अलग-अलग तरह के औजारों का ईजाद किया जाना भी इस क्षेत्र की ही जरूरत है। इतना ही नहीं कर्मचारियों की खदान में सुरक्षा को लेकर भी इंजीनियर्स का यही तबका काम करता है। माइनिंग इंजीनियरिंग से जुड़े बेहतरीन कॉलेजों के बारे में आइए जानें-

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग साइंस एंड टेक्नोलॉजी हावड़ा, पश्चिम बंगाल

साल 1856 के आसपास एक सिविल इंजीनियरिंग की शुरुआत राइटर्स बिल्डिंग कोलकाता में हुई थी। फिर 1857 में जब कलकत्ता विश्वविद्यालय शुरू हुआ तब इस संस्थान को मान्यता मिली। कुछ साल बाद, 1921 में संस्थान का नाम बंगाल इंजीनियरिंग कॉलेज कर दिया गया। माइनिंग इंजीनियरिंग से जुड़े कोर्स की शुरुआत साल 1956 में की गई थी। फिर मार्च, 2014 में संस्थान को सरकार ने अपने संरक्षण में ले लिया और इसका नाम इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग साइंस एंड टेक्नोलॉजी कर दिया गया। संस्थान की खास बात यह है कि यहां एंटीरैगिंग कमिटी भी है, जो छात्रों के लिए कॉलेज के शुरुआती दिन आसान बनाने का काम करती है।

फीस : इस संस्थान से माइनिंग इंजीनियरिंग में बीटेक करने के लिए करीब 5 लाख 10 हजार रुपये की फीस भरनी होती है।

वेबसाइट : https://www.iiests.ac.in

एमबीएम इंजीनियरिंग कॉलेज, जोधपुर, राजस्थान

एमबीएम इंजीनियरिंग कॉलेज, जोधपुर की शुरुआत साल 1951 में हुई थी और आज इसे देश का सबसे पुराने कॉलेजों में एक माना जाता है। करीब 68 साल पुराने इस संस्थान को 15 अगस्त के दिन राजस्थान सरकार ने ही शुरू किया था।

फीस : यहां से माइनिंग इंजीनियरिंग में बीटेक करने के लिए 1,20,000 रुपये की फीस भरनी होती है।

वेबसाइट : https://www.mbm.ac.in

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, रायपुर, छत्तीसगढ़

एनआईटी, रायपुर करीब पांच दशक से 12 क्षेत्रों में ग्रेजुएट स्तर के कोर्स पेश कर रहा है। संस्थान की केंद्रीय लाइब्रेरी में एक लाख किताबें हैं। इनमें जर्नल, संदर्भ पुस्तकें और पाठ्य पुस्तकें शामिल हैं। संस्थान में छात्र-छात्राओं के लिए 8 हॉस्टल हैं, जिनमें 5 लड़कों के और 3 लड़कियों के लिए रहने की सुविधा मुहैया कराते हैं।

फीस : माइनिंग इंजीनियरिंग में बीटेक करने के लिए करीब 4 लाख 65 हजार रुपये की फीस भरनी होती है। **वेबसाइट :** http://www.nitrr.ac.in

प्रमुख संस्थान

- विश्वेश्वरैया नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, नागपुर, महाराष्ट्र
  वेबसाइट: http://vnit.ac.in
- गवर्नमेंट पॉलिटेक्निक, नागपुर, महाराष्ट्र
  वेबसाइट: http://www.gpnagpur.ac.in/ gpnagpur_new/>
- गोवा कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, फार्मागुडी, गोवा वेबसाइट : http://www.gec.ac.in
- कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, गुइंदी तमिलनाडु वेबसाइट: https://ceg.annauniv.edu
- नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, राउरकेला वेबसाइट : https://www.nitrkl.ac.in

स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग, यूनिवर्सिटी ऑफ पेट्रोलियम एंड एनर्जी स्टडीज, देहरादून

उत्तराखंड सरकार ने इस संस्थान की शुरुआत साल 2003 में की थी। यहां कई अंडर ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स चलते हैं। इनकी मांग लगातार बढ़ रही है। जैसे सिविल इंजीनियरिंग, मैकेनिकल इंजीनियरिंग, ऐरोस्पेस इंजीनियरिंग, बिग डेटा एनालिटिक्स, पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन आदि। 44 एकड़ में बसे इस इंजीनियरिंग स्कूल का माहौल प्रकृति और हरियाली से भरपूर है। मतलब छात्र जब यहां पढ़ते हैं तो प्रकृति को बहुत पास से अनुभव भी करते हैं। यहां फूड कोर्ट है तो खेल का मैदान भी है। आधुनिक शोध प्रयोगशाला और मल्टीमीडिया इनेबेल्ड क्लासरूम भी हैं। साथ ही संस्थान में 90 प्रतिशत प्लेसमेंट का रिकॉर्ड भी रखा जाता है।

वेबसाइट : https://www.upes.ac.in

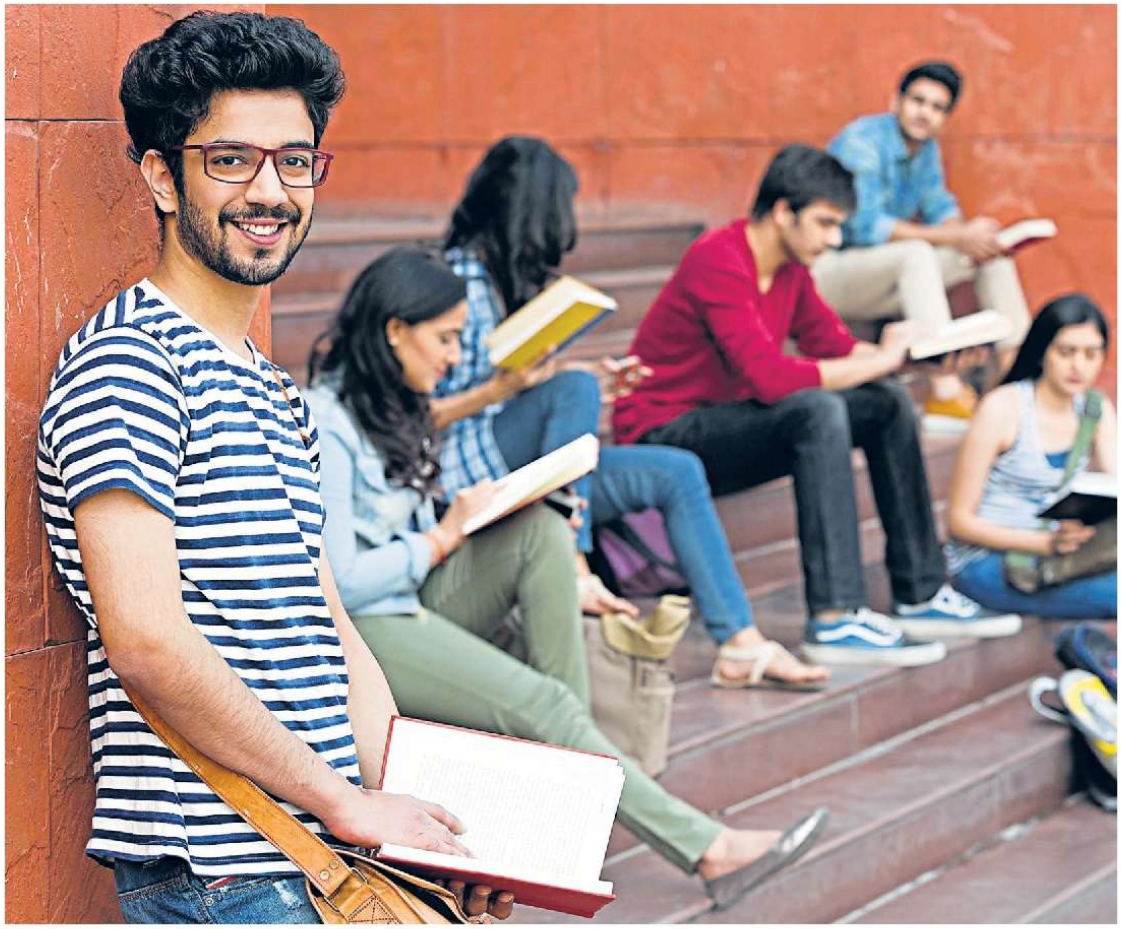

अब पीएचडी में एडमिशन के लिए नेट वालों को छूट होगी खत्म

अब तक नेट पास करने वालों को एमफिल और पीएचडी में दाखिले के लिए प्रवेश परीक्षा देने से छूट हासिल थी। कहीं-कहीं उन्हें इंटरव्यू से भी छूट मिल जाती थी। कई यूनिवर्सिटी एमफिल की डिग्री वालों को भी पीएचडी की प्रवेश परीक्षा से छूट देती आई हैं। लेकिन अब यूजीसी नए नियम लेकर आ रही है और उन्हें मिलने वाली ये छूट खत्म करने जा रही है। अब जो भी पीएचडी कोर्स में दाखिला लेना चाहेगा, उसको प्रवेश परीक्षा और इंटरव्यू से गुजरना पड़ेगा, यूजीसी जल्द ही नए नियमों का ऐलान करेगी। यूजीसी यूनिवर्सिटी को इस मामले में नियम तय करने के लिए दिशा-निर्देश भी जारी करेगी, ताकि प्रवेश परीक्षा का स्तर स्पष्ट रहे। इसमें न्यूनतम 50 फीसदी अंक लाने होंगे। कुछ वर्गों को इसमें पांच फीसदी की छूट मिलेगी। हालांकि नई मसौदा नीति में यह भी प्रस्ताव है कि अगर कोई राज्य चाहता है तो वह अपने क्षेत्र की यूनिवर्सिटी में पीएचडी में दाखिले के लिए कोई सामान्य प्रवेश परीक्षा का आयोजन भी कर सकता है।

दिल्ली यूनिवर्सिटी का हैप्पीनेस सर्टिफिकेट कोर्स

कभी शिवराज सिंह ने मध्य प्रदेश में हैप्पीनेस मंत्रालय शुरू किया था, फिर दिल्ली सरकार हैप्पीनेस क्लास को लेकर चर्चा में आई। अब दिल्ली यूनिवर्सिटी ने हैप्पीनेस का सर्टिफिकेट कोर्स शुरू किया है। यह कोर्स दिल्ली यूनिवर्सिटी के रामानुजन कॉलेज के स्कूल ऑफ हैप्पीनेस, सेंटर ऑफ एथिक्स एंड वैल्यूज ने शुरू किया है। यह कोर्स छह महीने का है, जिसके पहले बैच के लिए पूरी यूनिवर्सिटी से 45 छात्र चुने गए हैं। इन सभी छात्रों को तनाव, बेचैनी और निराशा से निपटने के तरीके बताए जाएंगे और विपरीत परिस्थितियों में भी कैसे खुश रहा जाए इसका प्रशिक्षण दिया जाएगा। इतना ही नहीं, इन छात्रों में से सर्वोत्तम चार छात्रों को विशेष प्रशिक्षण के लिए ऑस्ट्रिया भी भेजा जाएगा। दिलचस्प बात यह है कि इस कोर्स के लिए छात्र को कोई फीस नहीं देनी पड़ेगी और यदि वह सर्वोत्तम छात्रों में चुन लिया गया तो उसे ऑस्ट्रिया में मुफ्त प्रशिक्षण भी प्राप्त होगा।

तिरुपति आईआईटी को नए कैंपस के लिए 1,074 करोड़

तिरुपति आईआईटी के पहले बैच के 103 छात्रों को पहले दीक्षांत समारोह में डिग्री दी गई। इस मौके पर कैबिनेट की तरफ से तिरुपति आईआईटी के कैंपस के लिए 1,074 करोड़ रुपये भी मंजूर कर लिए गए हैं। कुल 2500 छात्रों के लिए बनने जा रहा यह कैंपस वर्ष 2024 तक बनकर पूरी तरह तैयार हो जाएगा। इस मौके पर केंद्रीय एचआरडी मंत्री निशंक ने स्टेज वन ए ट्रांसिट कैंपस का उद्घाटन किया। 2015-16 में शुरू हुआ आईआईटी तिरुपति देशभर के आईआईटी संस्थानों में छात्राओं की संख्या के लिए जाना जाता है। वर्तमान में भी वहां सबसे ज्यादा 17 फीसदी छात्र लड़कियां हैं। नए पास हुए बैच के कैंपस इंटरव्यू के लिए 50 कंपनियां आईं और 103 में से 75 छात्रों को ज्वाइनिंग लेटर भी मिल चुके हैं।

अमेरिकी छात्रों को मुफ्त हिंदी कोर्स करवाएगा भारतीय दूतावास

अमेरिका में हिंदी का प्रचार-प्रसार करने के लिए वहां स्थित भारतीय दूतावास ने पहल शुरू कर दी है। उसने अमेरिका की प्रतिष्ठित जॉर्ज वाशिंगटन यूनिवर्सिटी से इस संबंध में एक समझौता किया है। समझौते के तहत भारतीय दूतावास जॉर्ज वाशिंगटन यूनिवर्सिटी के छात्रों को 6 हफ्ते का नॉन क्रेडिट हिंदी इंट्रोडक्ट्री कोर्स करवा रहा है। यह कोर्स अगस्त के आखिर में शुरू हुआ है। इससे पहले, साल की शुरुआत में भारतीय दूतावास अपनी इमारत में हफ्ते में एक दिन एक घंटे की मुफ्त हिंदी क्लास भी शुरू कर चुका है। इन क्लास में 7 देशों के 87 छात्र हिस्सा भी ले चुके हैं। इस कोर्स के लिए दूतावास में भारतीय संस्कृति के शिक्षक डॉ. मोक्षराज को कमान दी गई है। यूनिवर्सिटी को उम्मीद है कि इन प्रयासों से बहुत जल्द इस यूनिवर्सिटी में भी स्थाई तौर पर हिंदी भाषा का एक कोर्स शुरू किया जा सकेगा।

आईआईटी मुंबई के दीक्षांत समारोह में कुता-पायजामा

आईआईटी मुंबई ने इस बार सालों से चले आ रहे पश्चिमी ढंग के कन्वोकेशन चोगे को तिलांजलि दे दी और सारे छात्रों और अतिथियों ने खासतौर पर डिजाइन किए गए कुर्ते-पायजामे ही पहने, जो हैंडलूम फैब्रिक से बने थे। इस समारोह में मुख्य अतिथि थे केंद्रीय एचआरडी मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक। मशहूर आईटी दिग्गज नंदन नीलकेणि को इस समारोह में डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया गया। नंदन आईआईटी मुंबई के छात्र रह चुके हैं। इस मौके पर 2,603 छात्रों को डिग्री दी गई, जिनमें से 385 पीएचडी के स्कॉलर थे। चार छात्रों को बेहतरीन प्रदर्शन के लिए प्रेसिडेंट ऑफ इंडिया मेडल यानी गोल्ड मेडल दिया गया। इस दौरान नीलकेणि ने नेशनल नॉलेज नेटवर्क में शामिल 23 आईआईटी संस्थानों के छात्रों को लाइव संबोधित किया। उनके संबोधन का मुख्य विषय था 'नव भारत का निर्माण, आईआईटीज के साथ'।

पूजा शर्मा

सफलता की राह बनाएं खुद

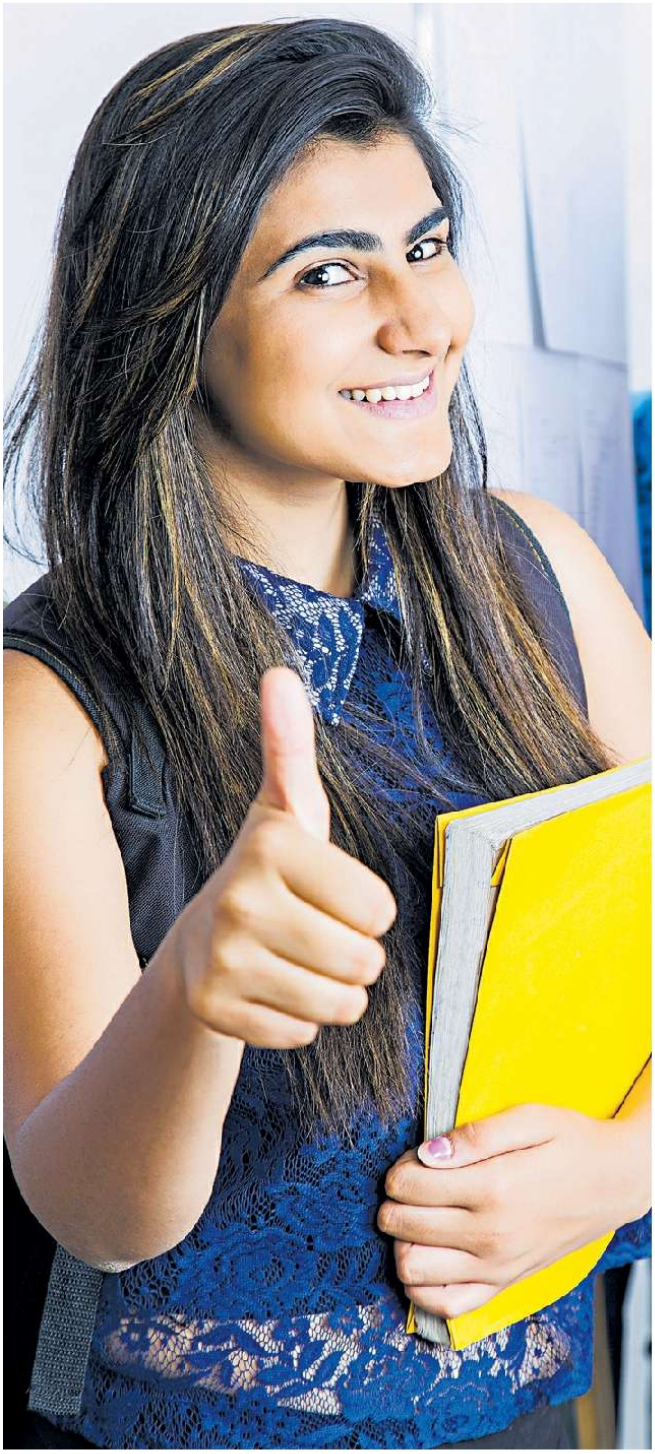

महान नाटककार विलियम शेक्सपियर ने लिखा है कि दुनिया में अधिकतर लोग अपने कर्म से नेता बनते हैं, न कि जन्म से। जन्म से तो सभी को वही अवसर मिलता है, जो एक सामान्य व्यक्ति को हासिल होता है। बस किसी सफल और असफल व्यक्ति में अंतर यही होता है कि सफल व्यक्ति अपनी कीमत को समझते हुए अपने काम में मस्त रहते हैं, जबकि असफल व्यक्ति दूसरों की सफलता के सहारे अपनी किस्मत चमकाना चाहते हैं। एक स्वाभिमानी और सफल व्यक्ति के जो लक्षण मनोविज्ञान के अनुसार बताए जाते हैं, वे हैं-

अपने आप को प्यार करने वाले

जीवन में हमेशा याद रखें कि खूबसूरती आपके भीतर छुपी हुई है, न कि आपको देखने वालों में। सबसे पहले तो आप अपने से प्यार करना सीखिए और यह स्वयं स्वीकार कीजिए कि आपको जो जीवन मिला है, वह अनमोल है। हमें अपनी कमियों को स्वीकार करने में कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए और अपनी कमियों को सुधारने में कभी देर नहीं करनी चाहिए।

समय के प्रति जागरूक रहें

यह मानव स्वभाव है कि वह उन लोगों की तरफ आकर्षित होता है, जिनके पास ज्ञान और बुद्धि है, जो समय के प्रति जागरूक हैं और जिनके पास इन सबको अभिव्यक्त करने की क्षमता है। यह सब किसी व्यक्ति के वे गुण होते हैं, जिनके कारण एक व्यक्ति दूसरे के प्रति आकर्षित होता है। आंतरिक ज्ञान ही वह संपदा है, जिसकी महक लंबे समय तक रहती है। बाहरी सुंदरता कभी भी खत्म हो सकती है, वह स्थायी नहीं हो सकती।

चुस्त-दुरुस्त और तरोताजा रहें

अच्छे और बुरे दिन, जीवन के दो पहलू हैं। बुरे दिन कभी भी, किसी भी समय किसी के जीवन में आ सकते हैं, लेकिन इससे घबराना नहीं चाहिए और न ही निराश होकर अपनी जिंदगी को दांव पर लगा देना चाहिए। सदी के नायक अमिताभ बच्चन ने 1996 में जब अपनी कंपनी ए. बी. सी. एल. बनाई और अपने फिल्मी करियर से संन्यास लेना चाहा तो उनके ऊपर मानो पहाड़ टूट पड़ा। इस कंपनी के चलते वे लगभग कंगाली की कगार पर पहुंच चुके थे। 1996 से लेकर 1999 तक में ही उनके ऊपर लगभग 2500 करोड़ रुपये का ऋण चढ़ चुका था, यहां तक कि उनका घर प्रतीक्षा भी बिकने की कगार पर था।

ऐसे समय में जब उन्हें कुछ नहीं सूझ रहा था, तब उन्होंने जीवन से हार मानने की जगह खुद को चुस्त-दुरुस्त रखना उचित समझा। एक समाचार पत्र में दिए अपने इंटरव्यू में उन्होंने स्वीकार किया कि उस समय मैंने सबसे ज्यादा अपनी सेहत पर ध्यान दिया, क्योंकि मुझे लगता था कि यदि मुझे कुछ हो गया तो मैं जनता के सामने अपना चेहरा कैसे दिखाऊंगा और उनका कर्ज कैसे चुकाऊंगा। उनका कहना था यदि आप चुस्त-दुरुस्त हैं और अपने आप को फिट रखते हैं, तभी तो आप काम करने लायक रहेंगे।

जीवन के प्रति यही जिजीविषा उन्हें इस मुसीबत के भंवर से निकालने में कामयाब रही और लंबे अंतराल के बाद वर्ष 2000 में उन्हें यश चोपड़ा की फिल्म 'मुहब्बतें' करने को मिली और इसी वर्ष उनका के.बी.सी. के माध्यम से टेलीविजन में भी पदार्पण हुआ।

इस तरह उनके जीवन की गाड़ी फिर पटरी पर दौड़ पड़ी। इसी के बूते उन्होंने खुद को कर्ज के बोझ से भी मुक्त किया। इस उम्र में जहां लोग रिटायर हो चुके होते हैं वे आज भी अपने आप को फिट रखते हुए न सिर्फ आज के दौर के नायकों से अधिक ऊर्जावान दिखते हैं, बल्कि उनसे अधिक सफल भी हैं।

सकारात्मक सोचें और अपने लिए समय निकालें

अमिताभ बच्चन ने अपने इंटरव्यू में यह स्वीकार किया कि यदि आप जीवन में सकारात्मक सोच रखते हैं तो इससे आप किसी भी तरह की परेशानी से छुटकारा पा सकते हैं। सकारात्मक सोच के साथ यदि आप स्वयं का मूल्यांकन करते हैं तो आप अपने भीतर छिपे हुए गुणों की पहचान कर सकते हैं। ऐसा लगातार करते रहने से अच्छी और सकारात्मक आदतें जीवन में शुमार हो जाती हैं और आप जीवन के पथ पर हमेशा आगे बढ़ते चले जाते हैं।

हमेशा बड़ा सोचें

ज्यादातर लोग अपने लक्ष्य को बहुत ही छोटा रखते हैं। उसे प्राप्त कर खुश हो जाते हैं, जबकि कुछ लोग हमेशा इसे बहुत बड़ा रखते हैं और उसे पाने की भरपूर कोशिश करते हैं, लेकिन हासिल नहीं कर पाते। इसीलिए खुद को क्या चाहिए, उसके लिए कितनी मेहनत कर सकेंगे आदि पर विचार करना जरूरी है। काम यदि आपकी रुचि के अनुसार होता है तो आप उसमें अपना 100 प्रतिशत देते हैं। हमारे जीवन में निरंतर कई तरह के संघर्ष चलते रहते हैं। संभव है हम किसी संघर्ष में निपुण नहीं हों, लेकिन उससे निपटने का हमारा तरीका हमारी सफलता को सुनिश्चित करता है।

असफलता से न डरें

एक प्रसिद्ध उक्ति है कि असफलता का मतलब है कि सफलता का प्रयास पूरे मन से नहीं किया गय। असफलता किसी काम को दोबारा शुरू करना का एक मौका देता है कि उसी काम को और भी अच्छे तरीके से किया जाए। जब आप यह निश्चय करते हैं कि चाहे कुछ भी हो, कितनी भी मेहनत करनी पड़े हमें अपना सफल होना ही है तो यह संकल्प हमें सफल बनाता है। इस संकल्प को निरंतर बनाए रखना पड़ता है।

अपनी रुचि के अनुसार चुनें करियर

करियर सलाह
आशीष आदर्श
करियर काउंसलर

• मैं समाजशास्त्र से ग्रेजुएशन कर रही हूं। समझ नहीं आता कि आगे क्या करूं? मैं एक मध्यम परिवार की लड़की हूं। कृपया कुछ करियर विकल्प बताएं।

प्रतिभा सिंह

अब महिलाएं लगभग हर उस क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं, जहां कभी पुरुषों का आधिपत्य हुआ करता था। फिर भी मैं आपके लिए सर्वाधिक उपयुक्त पांच विकल्पों की जानकारी दे रहा हूं। आप अपनी रुचि अनुसार चुन सकती हैं-

ऑनलाइन डिजिटल मार्केटिंग : यदि आपकी विशेष रुचि ई-कॉमर्स में है और घर बैठे कोई व्यापार करना चाहती हैं, तो ऑनलाइन डिजिटल मार्केटिंग का कोई सर्टिफिकेट कोर्स कर लें, ताकि आपको इस ट्रेड की अंदरूनी जानकारी हो जाए। आज बड़ी संख्या में महिलाएं घर बैठे ऑनलाइन डिजिटल मार्केटिंग कर अच्छी आमदनी हासिल कर रही हैं।

एनजीओ : देश-विदेश के कई गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ) सामाजिक कार्य में जुटे हुए हैं। अपने आस-पास किसी एनजीओ में अपना रिज्यूमे भेजें। यदि आपको यहां रोजगार मिल जाता है, तो आप अपने विषय से जुड़ा हुआ काम करेंगी, जिसमें स्वाभाविक रूप से आपका प्रदर्शन बेहतर होगा।

टीचिंग : यदि आपका रुझान टीचिंग में है, तो समाजशास्त्र से ही स्नातकोत्तर करें। इसके बाद, यूजीसी द्वारा साल में दो बार संचालित नेशनल एलिजिबिलिटी टेस्ट यानी नेट परीक्षा उत्तीर्ण कर किसी भी कॉलेज या विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य में लग सकती हैं।

पीआरओ : कॉर्पोरेट कंपनियां अपनी गतिविधियों को बताने और लोगों से संपर्क बढ़ाने के लिए पब्लिक रिलेशन ऑफिसर की नियुक्ति करती हैं, जिनमें अमूमन महिलाओं को रखा जाता है। यह विकल्प भी आपके लिए बढ़िया रहेगा।

फैशन डिजाइन : महिलाओं का एक बड़ा वर्ग फैशन को पसंद करता है। यदि आप भी उनमे एक हैं, तो स्नातक के बाद एक-वर्षीय फैशन डिजाइन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम कर लें और किसी फैशन कंपनी से जुड़ जाएं। एक अन्य विकल्प के तौर पर, थोड़ी पूंजी लगाकर आप अपना फैशन बुटीक भी स्थापित कर सकती हैं।

ह्यूमन रिसोर्स : एक ह्यूमन रिसोर्स मैनेजर का काम कंपनी के अनेक सोच वाले लोगों को लगातार कंपनी के उद्देश्य के लिए प्रेरित करना होता है। इस काम में बेहद धैर्य की आवश्यकता होती है और ऐसा माना जाता है कि महिलाओं में पुरुषों से अधिक धैर्य होता है। अतः ज्यादातर कंपनियों में एच आर मैनेजर महिलाएं ही होती हैं। इसके लिए बीए के बाद एच आर से एमबीए कर लें और आगे कदम बढ़ाएं।

• करियर के लिहाज से बिजनेस मैनेजमेंट कैसा रहेगा? इसमें कौन-कौन से पाठ्यक्रम हैं? मैं अभी मैट्रिक कर रहा हूं। आगे 10+2 में कौन-सा विषय लेना बेहतर होगा? क्या आर्ट्स करने के बाद मैनेजमेंट के क्षेत्र में प्रवेश किया जा सकता है? क्या इसमें प्रवेश के लिए गणित का मजबूत होना आवश्यक है?

युनुस परवेज

यदि आपका सपना कॉर्पोरेट में मैनेजमेंट के क्षेत्र में करियर बनाने का है, तो बिजनेस मैनेजमेंट का क्षेत्र आपके लिए ही है, क्योंकि करियर की लिहाज से यह आकर्षक और बेहिसाब अवसरों वाला क्षेत्र है। यह क्षेत्र न केवल आपको एक कॉर्पोरेट वर्ल्ड में नौकरी के लिए तैयार करता है, बल्कि आगे चलकर अपना व्यापार या स्टार्टअप शुरू करने का नजरिया भी देता है। देश भर के विश्वविद्यालय मैनेजमेंट के स्नातक, स्नातकोत्तर और इंटिग्रेटेड कोर्स चलाते हैं।

यदि हम 10+2 के बाद तीन वर्षीय स्नातक डिग्री की बात करें, तो इसे अलग-अलग नाम से देश भर में चलाया जाता है। उदाहरण के तौर पर, दिल्ली विश्वविद्यालय में इसे बीबीएस यानी बैचलर इन बिजनेस स्टडीज कहते हैं, जबकि बेंगलुरु विश्वविद्यालय इसे बीबीए यानी बैचलर इन बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन के नाम से और पाटलिपुत्रा विश्वविद्यालय इसे बीबीएम यानी बैचलर इन बिजनेस मैनेजमेंट के नाम से संचालित करता है। हालांकि इनके कोर्स कंटेंट काफी हद तक एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं। बिजनेस मैनेजमेंट कोर्स की मांग को देखते हुए आईआईएम यानी इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट इंदौर सहित कई अन्य संस्थानों ने 10+2 के बाद पांच वर्षीय इंटीग्रेटेड एमबीए कोर्स की भी घोषणा कर दी है।

बीबीए के बाद किसी उत्कृष्ट संस्थान से दो-वर्षीय एमबीए करने के बाद आपको पीछे मुड़कर देखने की आवश्यकता नहीं होगी। जहां तक इसके लिए 10+2 में विषयों का चुनाव करने का प्रश्न है, यदि आप आर्ट्स लेते हैं, तो अर्थशास्त्र या सांख्यिकी अवश्य रखें। एक अन्य विकल्प के तौर पर 10+2 में कॉमर्स भी इस क्षेत्र में प्रवेश के लिए आपका आधार मजबूत करेगा, क्योंकि मैनेजमेंट कोर्स में अर्थशास्त्र, अकाउंट्स और सांख्यिकी से संबंधित विषय शामिल होते हैं। मैनेजमेंट के क्षेत्र में सामान्य गणित का इस्तेमाल अकाउंट्स या कैल्कुलेशन या किसी तार्किक समाधान के लिए होता है। इसमें कठिन गणित के समीकरण की आवश्यकता नहीं होती, परंतु सांख्यिकी से संबंधित कुछ विषय आपको प्रमुखता से पढ़ना होगा।

फेसबुक पेज-hindustankinaidishayen पर भी अपने सवाल मैसेज व लाइक कर सकते हैं।

हमारा पता

आप भी अपने सवाल इस पते पर भेज सकते हैं-
सलाह, नई दिशाएं, हिन्दुस्तान, आकृति बिल्डिंग, सी-164, सेक्टर-63, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर-201301 (उ.प्र.)
ईमेल: naidishayen1@gmail.com

कंप्यूटर नेटवर्किंग

जोड़ें करियर के तार

इन दिनों नेटवर्किंग में करियर के कई विकल्प हैं। इन्हीं में से एक है स्टोरेज एरिया नेटवर्क यानी सैन। यह एक हाई-स्पीड नेटवर्क या सब-नेटवर्क है, जो कई सर्वरों के लिए स्टोरेज डिवाइसों के साझा पूलों को आपस में जोड़ता है। सैन किसी भी तरह के स्टोर डेटा को आसानी से स्थानांतरित कर सकता है और उस स्टोर डेटा को एक स्वतंत्र तथा हाई परफॉर्मेंस नेटवर्क में री-ऑर्गनाइज भी कर सकता है।

आईटी

कंपनियों या जहां भी स्टोर डेटा को एक पूल से दूसरे पूल या अन्य कई पूल तक पहुंचाने की जरूरत होती है, वहां स्टोरेज एरिया नेटवर्क में प्रशिक्षित युवाओं की काफी मांग है। यह एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें निपुणता हासिल करने के बाद नौकरी के लिए ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ता। वैसे भी इससे संबंधित अधिकतर कोर्स में इंटर्नशिप करवाई जाती है। इस दौरान ही युवाओं की आमदनी भी शुरू हो जाती है। यदि कंपनी को इंटर्नशिप के दौरान छात्र का काम मनमाफिक लगता है तो वहीं पर उसे नौकरी का ऑफर भी मिल जाता है। गूगल, एप्पल और आईबीएम जैसी कंपनियों में सैन मशीनें काम करती हैं ताकि उनका डेटा और आईटी सिस्टम सही तरीके से मैनेज हो सकें। इन मशीनों से ही क्लाउड का जन्म हुआ। क्लाउड एक प्रोसेस है, जहां सॉफ्टवेयर के साथ डेटा को नियंत्रित और प्रबंधित किया जाता है। इन मशीनों के बिना क्लाउड संभव नहीं है। ये मशीनें काफी महंगी होती हैं, इसलिए कोर्स करवाने वाले हर संस्थान के पास उपलब्ध नहीं होतीं। कोर्स के चुनाव से पहले यह मालूम कर लें कि संस्थान में व्यावहारिक अभ्यास की कितनी व्यास्था है। कंपनियों को भी आज प्रशिक्षित और निपुण युवाओं की जरूरत है। कंपनियां चाहती हैं कि उन्हें ऐसे कर्मचारी मिलें, जो उनके काम और कार्य संस्कृति से भली-भांति परिचित हों। ताकि उन्हें काम सिखाना न पड़े। इसलिए आज स्टोरेज एरिया नेटवर्किंग में दक्ष युवाओं की मांग बढ़ रही है। बैंक, रेलवे, डिफेंस और मल्टीनेशनल कंपनियों में इस तरह का कोर्स कर चुके युवाओं के लिए काफी संभावनाएं हैं।

प्रमुख संस्थान

- लॉजिक इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, कोच्चि
  वेबसाइट : www.logicindia.net
- नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स एंड इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, कालीकट
  वेबसाइट : www.nielit.gov.in
- एडवांस्ड स्कूल ऑफ इलैक्ट्रॉनिक्स एंड टेक्नोलॉजी
  वेबसाइट : www.edustars.in
- विवेकानंद आईटी इंस्टीट्यूट, वडोदरा
  वेबसाइट : www.vitinstitute.com

पाठ्यक्रम

इस कोर्स के सिलेबस में कंप्यूटर आर्किटेक्चर पर प्रैक्टिकल, सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर की जानकारी, सर्वर मशीन पर चिप लेवल स्तर तक का कार्य सिखाना, क्लाउड और सैन मशीन को खोल कर उसे पूर्ण रूप से चलने योग्य असेंबल करना एवं उनका संचालन करना, डेटा मैनेजमेंट और डिजास्टर रिकवरी लेवल तक सैन मशीन पर कार्य करना आदि शामिल हैं।

स्टोरेज एरियर नेटवर्क (सैन) कोर्स

यह कोर्स अलग-अलग संस्थानों में 18 महीने से लेकर दो वर्ष तक का है। कोर्स के शुरुआती आठ से 10 महीनों तक थ्योरी व प्रैक्टिकल करवाए जाते हैं। इसके बाद संबंधित कंपनियों में इंटर्नशिप कराई जाती है। इंटर्नशिप के दौरान छात्र बड़ी कंपनियों के कौशल स्तर तक पहुंच जाते हैं। कोर्स के बाद वे इन कंपनियों में 20 से 25 हजार रुपये वेतन की नौकरी हासिल कर सकते हैं। काम की गुणवत्ता बढ़ने के अनुरूप वेतन भी बढ़कर एक लाख रुपये तक हो सकता है।

योग्यता

यह कोर्स 12वीं या ग्रेजुएशन/बीटेक/बीएड के छात्र कर सकते हैं। 12वीं में आपके पास कोई भी विषय हो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, लेकिन 12वीं के छात्रों को एक से दो माह का फाउंडेशन कोर्स कराया जाता है, जिसमें वे टेक्नोलॉजी से रूबरू होते हैं और फिर आगे की पढ़ाई करते हैं। बीटेक या कंप्यूटर हार्डवेयर, नेटवर्किंग के छात्र भी प्रैक्टिकल ट्रेनिंग ले सकते हैं, ताकि वे कंपनियों की मांग के अनुरूप बन सकें।

अभिनव कुमार तिवारी

हिन्दुस्तान
तरक्की का नया नजरिया
www.livehindustan.com

रविवार, रविवार नहीं अगर फ़ुरसत नहीं.

आईए फ़ुरसत से जानें फ़ुरसत में
अपनों को, अपने परिवार को,
अपने दोस्तों को, अपनी दुनिया
को. क्योंकि 'फ़ुरसत' में है,
सबके लिए कुछ न कुछ.

हर रविवार
हिन्दुस्तान के साथ
मुफ़्त